'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०१ | वाराणसी, शनिवार, ५ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कुकरनाग (कश्मीर) २०-८-'५९

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश ! रूहानियत + विज्ञान = सर्वोदय !!

आज यहाँ कुछ सियासी पार्टी के लोगों से हमारी बातचीत हुई। कश्मीर में ऐसी कई सियासी पार्टियाँ हैं और उन सबके साथ हमारी खुले दिल से चर्चा हुई है। इस बात की बहुत खुशी होती है कि बड़े ही इत्मीनान और खुले दिल से हरएक ने अपनी चीजें साफ करके मेरे सामने रखी हैं। आज जिनके साथ चर्चा हुई है, उन्होंने भी अपनी बात बहुत खालिस दिल से मेरे सामने रखी है। मैंने भी मेरी बातें खुले दिल से उनके सामने रखीं।

सियासत से दूर रहें

मैं कहना यह चाहता हूँ कि यह साइन्स का जमाना है। इस जमाने में अब सियासत में कोई ताकत नहीं रह गयी है। इन्सान के हाथों में नये-नये हथियार आ गये हैं। इसलिए अगर फूट बढ़ानेवाली और तफरके बढ़ानेवाली सियासत बढ़ेगी तो इन्सान का खात्मा होनेवाला है। पार्टीवाले यह बात महसूस नहीं करते हैं। यह उनकी जहालत है। असली बात तो यह है कि आज नये-नये हथियारों की ईजाद हो रही है और वे हथियार ऐसे खतरनाक हैं कि उनकी बदौलत एक दिन दुनिया का खात्मा होने की नौबत भी आ सकती है, अगर हमारे तफरके बढ़ेंगे तो। इसलिए समझदार लोगों को चाहिए कि वे सियासत से दूर रहें, सियासत को दूर करें और रूहानियत से अपने मसले हल करें। मिली-जुली सियासत, जोड़नेवाली सियासत चाहिए। आज तक जो सियासत रही, वह जोड़नेवाली नहीं रही, तोड़नेवाली ही रही। इसलिए मैं 'सियासत' यह लफ्ज ही छोड़ देना चाहता हूँ।

वे भाई मेरी बात मानते तो थे, लेकिन फिर से कहते थे कि एक दफा हमारे सियासी मसले हल हो जायँ, फिर हम रूहानियत को लेंगे। मैं उनको समझा रहा था कि जब तक आप रूहानियत का रास्ता न लेकर सियासत का ही रास्ता लेंगे, तब तक आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं। अल्जीरिया, कोरिया, तिब्बत, तायवान, इंडोनेशिया, कश्मीर—ऐसे कई मसले हैं! पुराने मसले कायम हैं, नये पैदा हो रहे हैं। इसलिए यह समझ लीजिये कि सियासत से आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं। मेरी बात उनमें से कुछ लोग समझ रहे थे। वे रूहानियत का नाम लेते थे। रूहानियत का नाम सबको प्यारा है, उनको भी प्यारा था। इसलिए वे कबूल भी करते थे। लेकिन कबूल करके फिरसे अपना टट्टू, अपना घोड़ा पुरानी राह पर लाते थे।

मैंने मजाक में कहा : 'तुम मर जाओगे तो आखिर तुम्हारे लड़के रूहानियत को उठा लेंगे ?' वे कहने लगे कि 'हमने जो चीज चलायी, वही हमारे लड़के भी उठायेंगे।' मैंने कहा : 'ठीक है, तुम्हारे लड़के नहीं उठायेंगे, लेकिन तुम्हारे लड़के के लड़के याने तीसरी पीढ़ी—रूहानयित को उठा लेगी ? सियासत से मसले हल नहीं होंगे, क्या यह बात चौथी पीढ़ी के खयाल में आ जायगी ?' इस तरह मैंने उनसे कहा, किन्तु अपनी बात मैं उनको पूरी तरह समझा नहीं सका। मैंने हार मान ली।

हुकूमत विकेन्द्रित हो

आज सभी जगह पार्टीवाली बात चल रही है। नयी-नयी पार्टियाँ बन रही हैं। पुरानी पार्टियाँ मजबूत की जा रही हैं। लेकिन अब कुछ लोगों के मन में यह बात आ रही है कि सियासी पार्टियों से काम नहीं बनेगा, इसलिए एक ऐसी स्वतन्त्र जमात चाहिए, जो गैरजानिबदार होकर अवाम की खिदमत करेगी। आपको मालूम है कि इस समय मैंने अपनी आवाज इस पार्टीवाली सियासत के खिलाफ उठायी है। मैं कहता हूँ कि इसके लिए गाँव-गाँव की मिली-जुली ताकत खड़ी करनी होगी। हुकूमत विकेन्द्रित करनी होगी, अपनी सारी ताकत रूहानियत की राह पर लगानी होगी और जजबा पैदा किये बिना चर्चा करके मसले हल करने होंगे। मैं यह एक नयी चीज समझा रहा हूँ।

जयप्रकाश नारायण, केरल के केलप्पनजी, बिहार कांग्रेस के एक प्रमुख नेता वैद्यनाथ बाबू आदि अपनी-अपनी पार्टी छोड़कर इस काम में आये हैं। ऐसे कुछ नाम मेरे पास हैं। फिर भी कई नाम ऐसे भी हैं, जिनपर मैं असर नहीं डाल सका। लेकिन मुझे इस बात का ताज्जुब है कि इतने से लोग भी मेरी बात कैसे समझ रहे हैं! मेरी बात को कोई समझता नहीं, इसका मुझे अचरज नहीं होता, बल्कि मेरी बात थोड़े लोग भी क्यों न हो, पर समझते हैं, इसीका मुझे अचरज होता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जो मेरी बात करीब-करीब समझते हैं। आज भी वे भाई मेरी बात करीब-करीब समझ रहे थे। लेकिन उनका अपना भी कोई खयाल है, खैर!

समझाना मेरा काम है। उसका नतीजा क्या आता है, इसकी

www.vinoba.in

फिक्र मैं नहीं करता। फल को छोड़ना, उसका त्याग करना, यह बात मैं 'गीता' से सीखा हूँ। नतीजा भगवान पर छोड़ देता हूँ। मैं उसकी फिक्र नहीं करता हूँ। कितने लोग मेरी बात समझते हैं और कितने नहीं समझते हैं, यह देखना मेरा काम नहीं है। समझाना और लोगों की खिदमत करना, यह मेरा फर्ज है और यही मैं करता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि पार्टीवाले लोग भी अच्छी और सच्ची नियत से खिदमत करना चाहते हैं, लेकिन वे कर नहीं पाते। एक पार्टी खिदमत करने जाती है तो दूसरी पार्टी उसकी तरफ शक-शुबह की निगाह से देखती है। दूसरी पार्टी खिदमत करती है तो पहली उसकी तरफ शक की निगाह से देखती है। इस तरह देखने का नतीजा यह होता है कि जिनकी खिदमत होनी चाहिए, उनकी खिदमत नहीं होती है। सरकार से थोड़ी खिदमत होती है, पर उससे लोगों की ताकत नहीं बन पाती।

भेद पर भेद

लोगों की ताकत नहीं बनती है, यह बहुत बड़ी बात है। मगरीब (पश्चिम) से जो सियासत आयी, उसने हमें तोड़ा है। पहले से ही यहाँ तफरके, टुकड़े मौजूद थे, मगरीबी सियासत ने और बढ़ा दिये। मजहब के भेद, जबान के भेद, जाति के भेद—इस तरह से तरह-तरह के भेद मौजूद थे। वे उस सियासत के कारण और भी बढ़े। अलग-अलग पार्टियाँ बनीं। भेदों में इजाफा हुआ। एक-एक पार्टी में भी एम्बीशस लोग होते हैं। वे भी अपना-अपना ग्रूप बनाते हैं। एक-एक मन्त्री का अपना एक-एक गुट रहता है। अनेक पार्टियाँ, फिर एक-एक पार्टी के अलग-अलग ग्रूपस्, ग्रूप के गुट—नतीजा यह होता है कि देश की ताकत नहीं बनती।

देश में अरबों रुपयों का खर्चा बढ़ रहा है। इसलिए मैं चिल्ला रहा हूँ। इस समय मेरा 'क्राइंग इन दि वाइल्डरनेस' चल रहा है। लेकिन मुझे ताज्जुब इस बात का होता है कि इसपर भी लोग मेरी बातें सुनने के लिए आते हैं और खामोशी से सुनते हैं। मेरी कुछ बातें कुछ लोगों को जँचती हैं। इस सब का मुझे ताज्जुब होता है।

आनेवाला जमाना मेरे साथ

मैं लगातार आठ साल से घूम रहा हूँ और लोग मुझे पूछते हैं कि कब तक इस तरह घूमते रहेंगे? मैं उनको जवाब देता हूँ कि जब तक पाँव नहीं टूटेंगे, भगवान नहीं रोकेंगे और मसले हल नहीं होंगे, तब तक मैं घूमता ही रहूँगा। इतना मैं अपने विचार से चिपका हुआ हूँ। मैं लगातार सुनाता ही जा रहा हूँ। उसका नाप-तौल नतीजे से नहीं होता। नतीजा परमात्मा पर छोड़ देता हूँ। यह मेरी सीफत है। एक बात और है, वह यह कि जमाना मेरे साथ है। यहाँ जितने सियासतदाँ बैठे हैं, वे सब नादाँ हैं, क्योंकि आनेवाला जमाना मेरा है, उनका नहीं। यह मैं आपको समझाना चाहता हूँ।

पाकिस्तान में अयूब आया। उसी वक्त एकदम सब पॉलिटिकल पार्टियाँ खत्म हो गयीं, उनके दफ्तरों को ताले लग गये। याने ताकत के सामने सियासत की कुछ नहीं चलेगी। इसका मानी तो यही हुआ कि 'मॉडर्न मैशिनाइज्ड आर्मी' जिनके हाथ में रहेगी, कुल सियासत उन्हींके हाथ में जायगी। उनके सामने वह खत्म भी हो सकती है। जाहिर है कि इसके आगे जिनके हाथ में आर्मी की ताकत रहेगी, उन्हींके हाथों में ये सियासतदाँ भी रहेंगे। इससे उल्टे जो लोग रूहानियत की राह पर चलेंगे, वे उनकी तलवार छीन लेंगे। उनको तलवार छीनने के लिए इनको अपने हाथ में तलवार उठाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिनके हाथों में आज तलवार है, उनके दिल और दिमाग में ये रूहानियत की राह पर चलनेवाले लोग बैठेंगे। नतीजा यह होगा कि जिन्होंने अपने हाथों में तलवार उठायी है, वे खुद-ब-खुद वह तलवार कारखानों में भेज देंगे—हल बनाने के लिए।

अभी मैं 'आर्मी' वालों के सामने बोलकर आया हूँ। मेरी यह खुशकिस्मती है कि मुझे उनके सामने बोलने का मौका मिला। इसका कारण यह है कि मैं सियासत से अलग हूँ। सियासतवाला कोई हो तो वह 'आर्मी' के सामने बोलने के लिए नहीं जा सकता है। लेकिन मुझे वहाँ जाने दिया। इसपर से आप पहचान लीजिये कि आप कितने नादाँ हैं और मैं कितना दाना हूँ। आपकी और मेरी हैसियत में फर्क है। मैं अपने विचार कहीं भी जाकर समझा सकता हूँ। वैसे ही वहाँ भी मैंने अपनी रूहानियत के विचार उनके सामने रखे। रूहानियत की बात उनको भी जँचती है। मैं मायूस नहीं होता हूँ। इसलिए कि मैं जानता हूँ कि आनेवाला जमाना मेरा है, आपका नहीं है, नेताओं का नहीं है।

सियासी नेता गिरनेवाला है

आपके जो सियासी पार्टियों के बड़े-बड़े नेता हैं, वे ऐसे गिरनेवाले हैं, जैसे पतझड़! ओले गिरते हैं या बरफ पड़ता है, तब एकदम पतझड़ होती है, वैसे ही ये आपके सब लीडरान एकदम गिरनेवाले हैं, उनका एक ढेर होनेवाला है। लेकिन अभी इसका भान उन्हें नहीं है। वे गुरूर में हैं। हुकूमत का डण्डा उनके हाथ में है। मुझे वे डण्डा उठाते हैं, इसकी तकलीफ नहीं है। मैं तो उनके पास जाता हूँ, अपनी बातें सुनाता हूँ और वे मेरी बातें सुनते हैं। मेरी बात उनको जँचती भी है। लेकिन वे उसे अमल में नहीं ला सकते हैं। इसलिए नहीं कि वे उन्हें चाहते नहीं हैं, पर इसलिए कि वे एक बहाव में बहे जा रहे हैं। इस बहाव से बाहर निकलना उनके आपे के बाहर की बात है। वे घोड़े पर बैठे हैं, लेकिन लगाम उनके हाथ में नहीं है। वे 'वोटर्स' की तरफ देखते हैं और 'वोटर्स' उनकी तरफ देखते हैं। उनके हाथ में क्या है? बूढ़ा बाप कहता है कि मेरा काम बेटे के बिना नहीं चलता है और बेटा भी कहता है कि मेरा बूढ़े बाप के बिना नहीं चलता है। आखिर अल्लामियाँ बाप को जब छुड़ायेगा, तब वह छुटेगा।

आज इन सियासतदाँ का बड़ा जोर है। लेकिन आप देखेंगे कि एक वक्त ऐसा आयेगा, जब जिन हाथों ने एटम बम बनाया, वे ही हाथ उन बमों को छोड़ेंगे और लोगों की खिदमत में लगेंगे। जितने लोग सियासत से अलग रहकर रूहानियत का आसरा लेंगे, पनाह लेंगे, वे लोग साइन्स के जमाने में टिकेंगे नहीं। साइन्स के जमाने में रूहानियत गाइडेन्स देगी और साइन्स रफ्तार बढ़ायेगा। मोटर में एक यंत्र राह दिखानेवाला होता है और दूसरा यंत्र स्पीड, रफ्तार बढ़ानेवाला होता है। साइन्स आपकी जिंदगी की स्पीड, रफ्तार बढ़ायेगा और रूहानियत जिंदगी को दिशा, मार्गदर्शन दिखायेगी। इस तरह दोनों की मदद से आपकी जिंदगी चलेगी। अगर सियासत बीच

vinoba.in

में आयेगी और जिंदगी में दखल देगी तो आपकी मोटर गढ़े में जायगी।

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश !
रूहानियत + विज्ञान = सर्वोदय !

रूहानियत और विज्ञान एक हो जायँ तो दुनिया में बहिश्त (स्वर्ग) आयेगा, यह आप खूब समझ लीजिये। साइन्स का फायदा उठाना है, उससे काम लेना है तो उसके साथ रूहानियत को जोड़ना होगा और अगर उसका फायदा न उठाना हो, उसके बदौलत मर मिटना हो तो बीच में सियासत लानी चाहिए।

अवाम को तबाह करनेवाले चुनाव

इन्सान इस तरह नाहक खत्म होना नहीं चाहता है। पर होता क्या है ? अलग-अलग पार्टी के लोग एक-दूसरे से मिलते भी नहीं हैं। चुनाव आता है, तब एक पार्टी के लोग अवाम से कहते हैं कि तुम हमें चुनकर दो तो हम तुमको जन्नत में ले जायँगे। दूसरी पार्टी को चुनकर दोगे तो वह तुमको जहन्नुम में ले जायगी। ठीक इसी इरह दूसरी पार्टीवाले भी अवाम से बोलते हैं। याने अवाम के सामने एक-दूसरे को गाली देना, नुक्ताचीनी करना, यही उनका प्रोग्राम रहता है। फिर आपस में टकराते हैं। मेरा राज चला तो वे मुझसे टकराते हैं, उनका राज चले तो मैं टकराता हूँ। इस तरह होता है, तब बीच में अवाम तबाह हो जाती है। फिर आपके देखते-देखते मिलिटरी का राज आ जाता है।

व्यक्तिराज्य : पार्टीराज्य

आप देखते हैं, आज अमेरिका में मिलिटरी का राज है। वहाँका मुखिया मिलिटरी मैन है। फ्रान्स में मिलिटरी का राज है। जिस फ्रान्स में रूसो, वाल्टर जैसे लोग हो गये, जिस फ्रान्स ने दुनिया को रूहानियत दी, सिखायी, उसी फ्रान्स में आज एक आदमी का राज है, देगाल ! क्या इजिप्ट में और क्या इराक में ? बर्मा में भी एक आदमी के हाथ में राज चल रहा है। रूस में ख्रुश्चेव का राज चल रहा है। ख्रुश्चेव और उसका प्यारा दोस्त–दोनों मिलकर हिंदुस्तान आये थे। याने एकदम डबल नेता आये थे। हमने बड़े प्यार से उनकी आरती की, जयदेव–जयदेव–ऐसी आरती की। बड़ा भव्य स्वागत किया। वे दोनो प्यारे थे, सच्चे दोस्त थे। लेकिन एक ने दूसरे को खत्म कर डाला। अब ख्रुश्चेव दुबारा हिंदुस्तान में आयेगा तो अकेले आयेगा, वह दूसरे को साथ में नहीं लायेगा। अब आयेगा तो एक ही आदमी आयेगा। फिर भी हम उसकी आरती करेंगे और उसे भी कोई खत्म करनेवाला निकलेगा, तब वह भी नहीं रहेगा। लेकिन राज वहाँ एक ही आदमी का है। एक ही आदमी के 'डिसीशन' पर राज चलेगा। यही बात 'पार्टी' में भी होती है। जैसे एक आदमी का राज होता है, वैसे ही एक पार्टी भी मान लीजिये चुन कर आयेगी तो उसी पार्टी का याने उसके चन्द लोगों के हाथ में राज रहेगा। कहीं कांग्रेस चुनकर आयी तो कहीं कम्युनिस्ट चुनकर आये। ४० की 'मेजॉरिटी' से चुनी हुई पार्टी रहती है। कोई बिल जानेवाला हो तो पार्लमेंट में आने के पहले पार्टी-मीटिंग बुलाते हैं। पार्टी-मीटिंग में उस बिल को १९ विरुद्ध २१ की मेजारिटी से पास करते हैं, ताकि वह बिल पार्लमेंट में आने तक १९ लोग उसके खिलाफ वहाँ नहीं बोल सकेंगे, क्योंकि पार्टी की डिसिप्लीन होती है, ह्विप होती है। पार्टी की जो राय होती है, उसके खिलाफ नहीं बोल सकते हैं। याने पहले ४० प्रतिशत का राज था, अब २१ प्रतिशत का है। उन २१ प्रतिशत वालों में भी तीन-चार लोग ऐसे होते हैं, जो वह बिल लाने में प्रमुख होते हैं। उनकी राय से ही सब बातें चलती हैं। अगर उनकी कोई न माने तो वे धमकाते हैं। आखिर धमकाकर हम वह बिल पास कर लेते हैं। मतलब यह कि आखिर सारा दारोमदार दो-चार मुख्य लोगों पर ही रहता है। पुराने जमाने में यही था। अकबर आया तो राज अच्छा चला, लोग सुखी थे। औरंगजेब आया तो लोग दुःखी बने थे। बख्शीजी आये तो लोग सुखी, नहीं तो दुःखी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि आगे का जमाना साइन्स का जमाना है। साइन्स के जमाने में गाइडेन्स देने का हक सियासत का नहीं है, स्पिरिच्युअलिटी का, रूहानियत का है। अब सियासत की कुछ नहीं चलेगी। वह अगर कुछ करेगी भी तो मिस्गाइड करेगी और मोटर जोरों से गढ़े में जायगी।

कश्मीर के काम की चिन्ता

कश्मीर में मुझे इसी बात की फिक्र है, यही समस्या मेरे सामने है कि मेरे यहाँसे चले जाने के बाद यहाँ का काम कौन करेगा ? यह काम कौन जारी रखेगा ? क्या कोई ऐसा गैर-जानिबदार, खिदमतगार निकलेगा ? अगर कोई ऐसा निकलेगा तो यहाँके लोगों की खिदमत होगी, काम होगा। अगर कोई नहीं निकलेगा तो मैं अल्लाह की इबादत करूँगा। कुरानशरीफ में कहा है :

"अलैकल् बलागुल मुबीन्"

"तेरे पर जिम्मेदारी बलग की है, याने पैगाम पहुँचाने की जिम्मेदारी तेरे पर है और हमारे पास हिसाब है।" मैंने आपके पास पैगाम पहुँचा दिया है। मैं बिलकुल दिल खोलकर पैगाम पहुँचा रहा हूँ। अब गाइडेन्स कौन देगा ? रूहानियत ! ताकत कौन देगा ? साइन्स–विज्ञान ! रूहानियत और विज्ञान, इन दोनों के अलावा तीसरी कोई चीज इसके आगे नहीं चलेगी। ◆◆◆

भाषावार प्रांत-रचना

जिन-जिन सीमास्थलों पर भिन्न भाषी लोग रहते हैं, वहाँ भाषाओं के कारण काफी द्वेष फैल गया है। लोगों में मनमुटाव पैदा हुआ है और पारस्परिक द्वेष जारी है। भिन्न भाषाओं की सीमा में जो लोग रहते हैं, वे दोनों भाषाएँ प्रेम से सीखें। जहाँ भाषा-भेद है, वह झगड़े का नहीं, बल्कि समन्वय प्रेम और संगीत का क्षेत्र है। भाषावार प्रांत-रचना करना ठीक है। ऐसा होने से ही हम देश की सेवा कर सकते हैं। इसलिए भाषा के अनुसार प्रांत बनाना हमारे देश की ताकत के लिए हम जरूरी मानते हैं। इससे अभिमान और द्वेष के लिए स्थान न रहे, बल्कि जनता की सहूलियत, भाषा के विकास और समन्वय के लिए स्थान रहे, ऐसा होना चाहिए। हमारे देश में भाषा के कारण काफी बेचैनी है, इस बेचैनी की कोई आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है शांति-पूर्वक सोचने की। भाषा-समिति की यह जो रिपोर्ट है, उसपर हम गौर करें और छोटे-छोटे भेदों में न पड़ें। भेद में से अभेद की ओर जाना ही हमें प्रिय है।

www.vinoba.in

◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

कुकरनाग (कश्मीर) २०-८-'५९

देश का निर्माण बाँधों और सड़कों के निर्माण से नहीं, इन्सान के निर्माण से होगा

आप देख रहे हैं कि 'नया कश्मीर' बन रहा है। सरकार की तरफ से योजना बन रही है। बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है, हजारों नौकर काम कर रहे हैं। गाँव-गाँव में डेवलपमेन्ट ब्लॉक, कम्युनिटी प्रोजेक्ट वगैरह चल रहे हैं। कहीं सड़कें, स्कूल, मकान बन रहे हैं तो कहीं कुछ कारखाने खोले जा रहे हैं। कहीं कुछ तो कहीं कुछ ! नित नया कुछ बन ही रहा है। जैसे कोई मंदिर या मस्जिद बनती हो, वैसे ही लगातार पाँच-दस साल से अपना देश बन रहा है। दस वर्ष पहले आये हुए टूरिस्ट (मुसाफिर) अगर अब फिर यहाँ आयेंगे, यहाँके फोटो खीचेंगे तो उन्हें कुदरत जैसी की तैसी ही दीख पड़ेगी, लेकिन अभी यहाँ जो इन्सानों ने बनाया है, उसमें बहुत फर्क हुआ है, ऐसा दिखाई पड़ेगा। पहले जहाँ काश्त नहीं थी, वहाँ आज काश्त हो रही है। कुछ नये पेड़ लगाये हैं, बड़ी नदियों की नहरें बनी हैं।

क्या नया इन्सान बन रहा है ?

हर सूबे में निर्माण का बहुत बड़ा प्रयत्न हो रहा है, वैसे यहाँ भी हो रहा है। लेकिन क्या नया समाज बन रहा है ? नया इन्सान बन रहा है ? क्या पुराने दिमागवाले पुराने इन्सान में कुछ फर्क पड़ रहा है ? क्या कुछ नयी कद्रें (वैल्यूज़) बन रही हैं ? अगर इन सब सवालों का जवाब 'नहीं' है और आज भी अगर वे ही पुराने झगड़े, फिरकापरस्ती, संगदिली, छोटे-छोटे जजबात हैं तो फिर मकानात, खेती और सड़कों में फर्क होने से आखिर क्या होगा ? वैसे तो सैलाब आये या जलजला हो जाय, तब भी क्या फर्क नहीं पड़ेगा ? अस्सी फी सदी मकानात वगैरह ढह जायँगे, उन्हें नये सिरे से बसाना होगा। पर नया बसा लेने से हुआ क्या ? कुदरत, मकानात, कपड़े पहनने का ढंग आदि सब बदला, लेकिन दिल और दिमाग में कोई बदल नहीं हुआ तो इतना ही होगा कि पुराने जमाने में जो झगड़े छोटे पैमाने पर होते थे, वे अब साइन्स की वजह से बड़े पैमाने पर होंगे। पहले की लड़ाइयों में उधर ४० और इधर पचास लोग होते थे, फिर इधर ४००, उधर ५०० और अब इधर ४ लाख तो उधर ५ लाख होते हैं। अब और आगे की लड़ाइयों में इधर ४० करोड़ और उधर ५० करोड़ लोग होंगे, यानी एशिया के खिलाफ यूरोप इस तरह खड़े होंगे।

इन्किलाब कब आयेगा ?

दिल और दिमाग में फर्क नहीं पड़ने से इन्सान की जिंदगी में इन्किलाब नहीं आ सकता। इन दिनों 'इन्किलाब जिंदाबाद' कहा जाता है। इसके मानी है कि मकान गिराने और नये खड़े करने की जो ताकत उसके हाथ में थी, वह इसके हाथ में चली आयी। लेकिन यह कोई इन्किलाब नहीं है। रूस में कम्युनिज्म आया तो क्या हुआ ? जार के हाथ में जो ताकत थी, उससे ख्रुश्चेव के हाथ में क्या कम है ? जार गया और स्टालिन आया। अब स्टालिन गया और ख्रुश्चेव आया। दो साल पहले यहाँपर बुल्गानिन और ख्रुश्चेव आये थे। यहाँपर उनकी खूब पूजा-अर्चा हुई। उनपर फूल चढ़ाये गये, नैवेद्य चढ़ाया गया। आरतियाँ उतारी गयीं। जितनी पूजा अमरनाथ की होती है, उतनी ही उन दोनों की हुई। उसके बाद उन दोनों में मुखालिफत हुई तो अब बुल्गानिन का पता ही नहीं है। पहले राजाओं के जमाने में जो होता था, वही इस जमाने में भी हुआ। इन्किलाब तब होता है, जब प्यार से दिल बदलता है। इसलिए माना कि दुनिया बदल रही है, दस साल पहले का कश्मीर आज नहीं रहा है, लेकिन दिल और दिमाग वही रहा तो इन्किलाब नहीं होगा।

हम नयी राह बना रहे हैं

भूदान-ग्रामदान में छोटे पैमाने पर लोगों के दिल बदलने की कोशिश हो रही है। दिल और दिमाग में तबदीली लाकर उन्हें नया बनाया जा रहा है। यह कोशिश छोटी है, लेकिन राह नयी है। पुरानी राहें सब उखड़ गयी हैं। हम नयी राह बना रहे हैं।

आज कश्मीर की सरकार कुछ काम करती है, लेकिन गाँव-गाँव के लोग क्या करते हैं ? क्या वे मिल-जुलकर काम करने लगे हैं ? जमीन की मिल्कियत मिटाने लगे हैं ? अपना मन्सूबा बनाने लगे हैं ? अगर यह सब होता है तो नया इन्सान बनेगा, नहीं तो नयी दुनिया बन जायगी, तब भी नया इन्सान नहीं बनेगा। सरकार की तरफ से जो काम किया जाता है, उससे दुनिया बनती है, लेकिन नया इन्सान नहीं बनता है। नया इन्सान बनाने का काम वे करते हैं, जो रूहानी ताकत को पहचानते हैं। माली हालत बदलने की बात है, वह बाहर की चीज है। अन्दर की चीज बदलनी हो तो रूहानी ताकत चाहिए। नयी राह पर चलकर रूहानी ताकत बढ़ाने की हमारी यह एक छोटी-सी कोशिश हो रही है।

हर इन्सान में ताकत पड़ी है। अगर हम ताकतों को जोड़ना चाहते हैं, सबकी ताकतें इकट्ठा करके नया समाज बनाना चाहते हैं तो जोड़नेवाली तरकीब चाहिए। जोड़नेवाली तरकीब सियासत या मजहब नहीं हो सकती है, रूहानियत ही हो सकती है। मैंने मजहब और रूहानियत में जो फर्क किया है, उसे समझने की जरूरत है। मजहब पचास हो सकते हैं, लेकिन रूहानियत एक ही हो सकती है। मजहब, सियासत, जबानें चन्द लोगों को इकट्ठा करते हैं और चन्द लोगों को अलग करते हैं। लेकिन रूहानियत कुल इन्सानों को एक बनायेगी। इसलिए आप इस तहरीक की तरफ माली तबदीली लानेवाली तहरीक की निगाह से मत देखिये, बल्कि अखलाकी और रूहानी तरक्की की निगाह से देखिये, तभी इसकी असलियत आपको मालूम होगी और आपके दिल का रुझान उसकी तरफ होगा। ◆◆◆

अनुक्रम

१. सियासत + विज्ञान = सर्वनाश ! रूहानियत + विज्ञान = सर्वोदय !!
कुकरनाग २० अगस्त '५९ पृष्ठ ६३५
२. देश का निर्माण बाँधों और सड़कों के निर्माण से नहीं..
कुकरनाग २० अगस्त '५९ ,, ६३८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी